मई-२०२६

अक्रम एक्सप्रेस

छुट्टियों... का... मज़ा...

संपादकीय

बालमित्रों,

गर्मियों की छुट्टियाँ आ गई हैं! लंबे-लंबे दिन, स्वादिष्ट आम, मज़ेदार गेम्स और मज़ेदार कहानियों के लिए ढेर सारा समय। कहानी सुनने का सबसे ज्यादा मज़ा कब आता है? जब कोई हमें सुनाता है तब।

इन गर्मियों की छुट्टियों में थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने मिलकर डीडीमा जंगल के सभी जानवरों को अद्‌भुत कहानियाँ सुनाईं। ये कहानियाँ सामान्य बच्चों की थीं जिन्होंने असामान्य काम किए और लिटल हीरोज़ बन गए!

चलो, इन कहानियों को सुनने के लिए तैयार हो जाएँ। और शायद पढ़ते-पढ़ते हमें कहीं 'लिटिल हीरो' बनने का रास्ता मिल जाए।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

May 2026
Year 14, Issue : 02
Conti. Issue No.: 158
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2026, Mahavideh Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

स्टोरी सफ़ारी

डीडीमा जंगल में गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गई थीं। सूरज दादा तप रहे थे, आम पक गए थे, लेकिन पूरे जंगल में 'क्या करूँ, क्या करूँ' का माहौल छा गया था। थीओ, रिज़ो, जिफ्फी और ज़ोई एक बड़े बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर बातें कर रहे थे।

थीओ उकता कर बोला, 'कितनी गर्मी है! मैं तो पिज़्ज़ा के चीज़ की तरह पिघल रहा हूँ।'

ज़ोई ने अपनी किताब बंद करते हुए कहा, 'यह बुक भी पढ़ ली। कितनी अच्छी थी। पर अब आगे क्या?'

तभी जिफ्फी की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। रिज़ो भी शिकायत करने जा ही रहा था लेकिन उसे शिकायत करने का चान्स ही नहीं मिला। जिफ्फी की बात सुनकर रिज़ो चुप हो गया।

जिफ्फी : मैंने क्या देखा, पता है?

रिज़ो : कैसे पता होगा? तुम टॉप फ्लोर पर हो और हम ग्राउन्ड फ्लोर पर। तुम्हें जो दिखता है वह हमें नहीं दिखता। क्या देखा तुमने?

जिफ्फी : विक्की बंदर दो बाल्टी भरकर पानी ले आया। टोरो कछुए के घर के बाहर दो मटके रखे हैं। उसने उसमें पानी डाला और गाना गाते-गाते चला गया। थोड़ी देर बाद टोरो बाहर आया, तो उसे बहुत हैरानी हुई कि उसके मटके भरे हुए हैं और वह बहुत खुश हो गया।

रिज़ो : सच में? टोरो के कहे बिना ही विक्की ने इतनी गर्मी में टोरो के लिए पानी भरा? विक्की कितना अच्छा है!

'आइडिया!' ज़ोई बोली, 'यह तो वैसी ही स्टोरी है, जैसी मैंने इस बुक में पढ़ी। अगर हम डीडीमा जंगल में एक 'स्टोरी-सफ़ारी' का सेशन रखें तो? उस सेशन में सबको ऐसी कहानियाँ सुनाएँगे जो रियल सुपर हीरोज़ की हों।'

'यानी?', थीओ ने पूछा। ज़ोई ने सबको अपना आइडिया समझाया और थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने मिलकर डीडीमा जंगल में 'स्टोरी सफ़ारी' का आयोजन किया। तीन-चार दिनों में सारी तैयारियाँ हो गईं। निमंत्रण दे दिए गए। उस रात डीडीमा जंगल के लगभग सभी जानवर खुले आसमान के नीचे घास के नरम बिस्तर पर बैठकर कहानियाँ सुनने के लिए तैयार हो गए।

रोल्स रॉयस

थीओ ने पहली कहानी सुनाना शुरू किया :

मान लो कि आपके पास कोई बहुत ख़ास चीज है, जो स्कूल में किसी के पास नहीं है। तो आप क्या करोगे? वह चीज सबको दिखाओगे या नहीं? मैं एक ऐसे लड़के की बात बताऊँगा, जिसके पास कुछ ऐसा था, जो किसी और के पास नहीं था, और उसने कुछ बहुत ख़ास किया।

उस लड़के का नाम था, रतन। रतन ने मुंबई के एक प्रसिद्ध स्कूल में ऐडमिशन लिया था।

रतन के घर से स्कूल ज्यादा दूर नहीं था लेकिन उसकी दादी की ज़िद थी कि उसे रोज स्कूल छोड़ने और लेने के लिए रोल्स-रॉयस गाड़ी ही जानी चाहिए। नन्हें रतन को यह बात पसंद नहीं थी। बड़ी गाड़ी से उतरकर सबका ध्यान अपनी तरफ खींचना उसे अच्छा नहीं लगता

था। स्कूल के बच्चों पर इस तरह से इम्प्रेशन डालने में उसे शर्म आती थी।

लेकिन साथ ही दादी को नाराज़ भी नहीं करना था। इसलिए उसने एक तरकीब सोची। उसने ड्राइवर से कहा, ‘आप मुझे स्कूल से थोड़ा दूर उतार देना और उसी जगह वापस लेने आना।’ और बस, उस दिन से कोई देख नहीं पाए इस तरह स्कूल से कुछ दूरी पर गाड़ी से उतरकर, रतन दूसरे बच्चों की तरह पैदल चलकर ही स्कूल में दाखिल होता।

इस तरह, रतन को दूसरों से अलग या खास नहीं दिखना था, बल्कि वह सामान्य रहकर सबके साथ घुल-मिल जाना चाहता था। यह बात थी, भारत के

बड़े उद्योगपति रतन टाटा की। बहुत सफलता पाने के बाद भी वे उतने ही विनम्र बने रहे, जितने बचपन में थे। वे टाटा कंपनी और भारत देश के अमूल्य रतन साबित हुए और हज़ारों युवकों के लिए एक 'सच्चे हीरो' बन गए।

थीओ ने कहानी समाप्त करते हुए कहा, 'यह स्टोरी पढ़कर मैं समझ गया हूँ कि महान व्यक्ति अपनी महानता का प्रदर्शन करके नहीं बल्कि विनम्र रहकर महान बनते हैं।' थीओ की ऐसी बड़ी बात सुनकर सब वाह वाह करने लगे।

थीओ थोड़ा शरमा गया और स्टेज से नीचे उतर गया।

ज्ञानी कहते हैं...

दो-चार गाड़ियाँ खुद के पास हों तो उसका अभिमान नहीं करना चाहिए। अभिमान करने से (उन चीजो की) जाने की तैयारी हो जाती है। जब हमारे पास विशेष सांसारिक साधन (यानी कि गाड़ी, बंगला, अच्छे गैजेट्स आदि) हों तब नम्रता होनी चाहिए।

कभी अगर परीक्षा में फेल हो जाओ...

दूसरी कहानी सुनाने के लिए रिज़ो स्टेज पर आया। माइक हाथ में लेकर उसने पूछा, क्या आप स्कूल में कभी किसी विषय में फेल हुए हैं? मैं हुआ हूँ। एक बार मैं हिन्दी में फेल हुआ था। फेल होने के बाद मुझे ऐसा लगता था कि मैं हिन्दी में बहुत कमज़ोर हूँ। लेकिन यह स्टोरी पढ़ने के बाद मेरी सोच पूरी तरह बदल गई।

यह कहानी है, भारत के महान लेखक आर. के. नारायण की। कई साल पहले टी.वी. पर एक शो आता था 'मालगुडी डेज़'। उस समय के बच्चों का यह फेवरिट शो था। यह शो एक उपन्यास पर से बना था। जिसके लेखक आर. के. नारायण थे। यह उपन्यास (नोवेल) उन्होंने अंग्रेजी भाषा में लिखा था। तो बचपन से ही उन्हें अंग्रेजी में अच्छे मार्क्स आते होंगे न? नहीं!

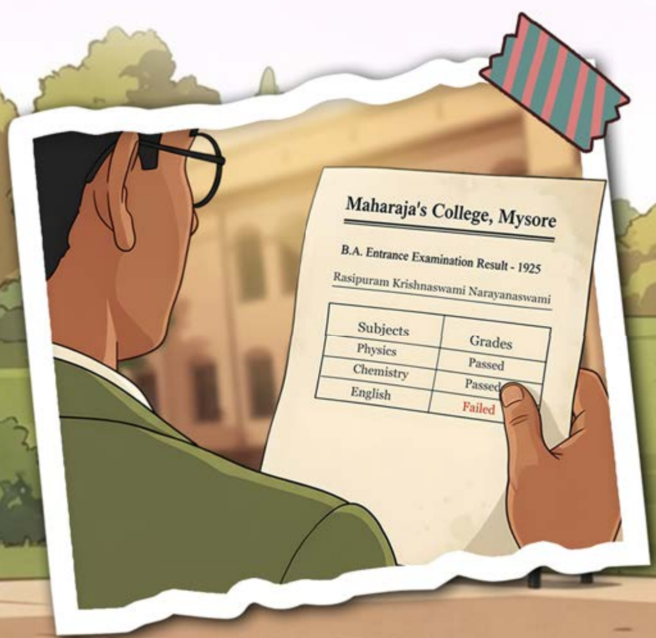

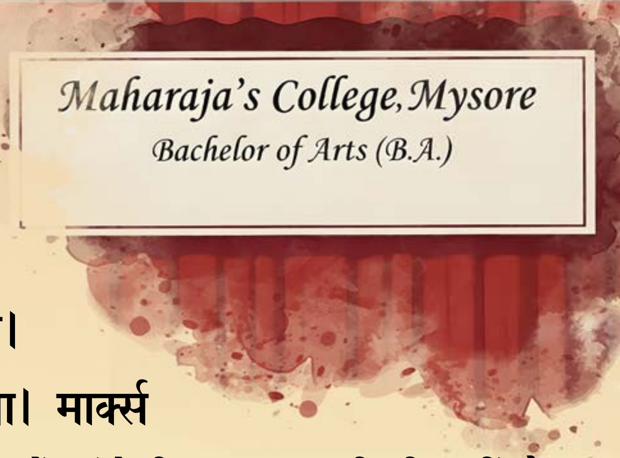

हकीकत में वे युनिवर्सिटी की एन्ट्रन्स एग्ज़ाम में अंग्रेजी में फेल हो गए थे। उनके मार्क्स देखकर उनके परिवारवालों को बड़ा झटका लगा था। क्योंकि अंग्रेजी उनका प्रिय सब्जेक्ट था। मार्क्स इतने खराब थे कि कईयों को लगा कि उन्हें अंग्रेजी भाषा आती ही नहीं है।

उदास या गुस्सा होने के बजाय नारायण ने कुछ अलग ही किया। उन्होंने पूरा साल अंग्रेजी भाषा अच्छी तरह सीखने का फैसला किया और बिल्कुल हार नहीं मानी। वे लाइब्रेरी से अंग्रेजी की किताबें ले आए और पढ़ना शुरू किया। कहानियाँ पढ़ते-पढ़ते उन्हें तरह-तरह के विषयों पर कहानियाँ लिखने के आइडियाज़ भी आए।

उन्हें कभी ऐसा नहीं लगा कि फेल होने के कारण उनका एक साल बर्बाद हो गया और अंग्रेजी उनका नापसंद विषय भी नहीं बना। उस साल उन्होंने इतना कुछ पढ़ा, सोचा और लिखा

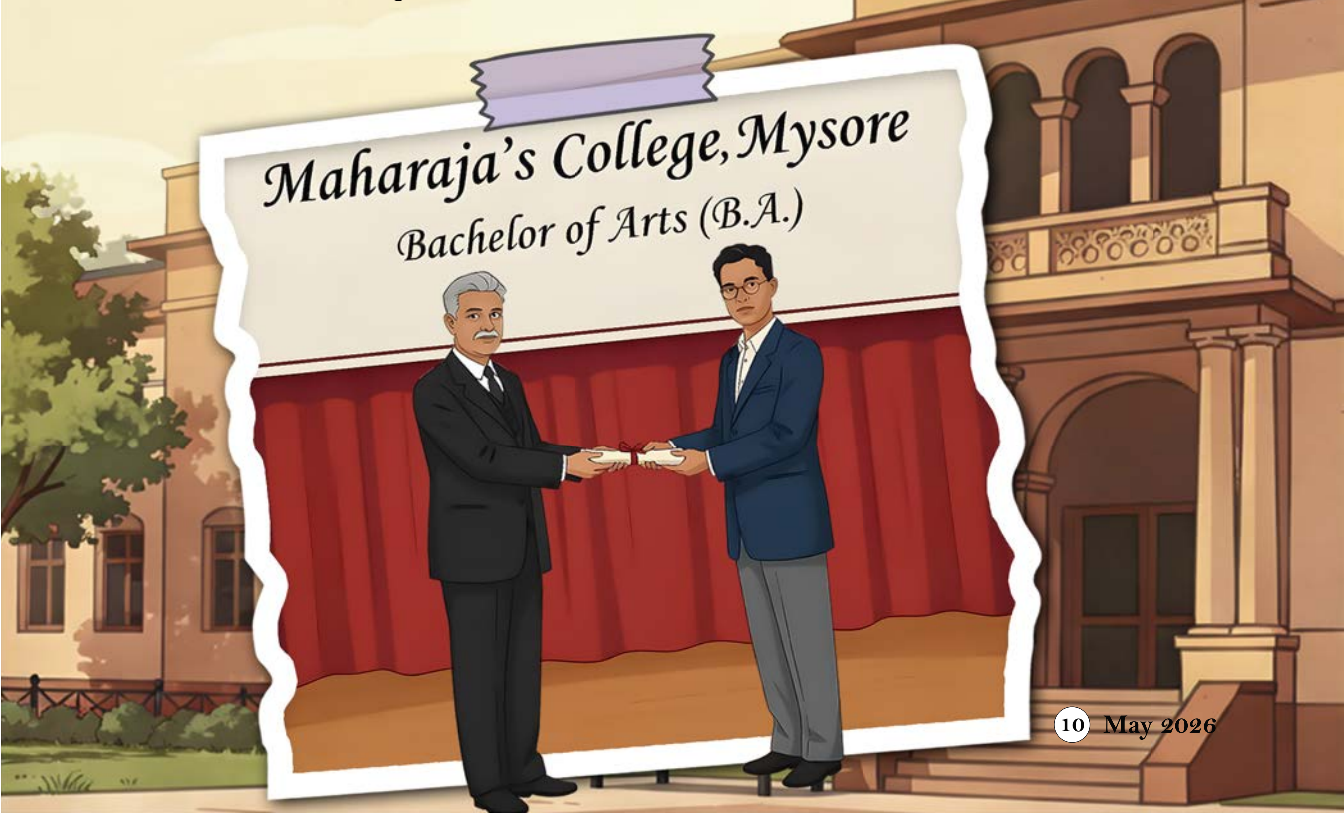

कि मानो लेखक बनने की सारी तैयारियाँ हो गईं।

दूसरे साल वे पास हुए और कॉलेज से डिग्री भी हासिल कर ली।

रिज़ो ने आखिरी वाक्य हिन्दी में कहा, 'तो कभी अगर परीक्षा में फेल हो जाओ, तो हार मत मानना। कभी-कभी अच्छी कहानियों की शुरुआत ऐसे भी होती है।'

सबने तालियाँ बजाईं। अब रिज़ो के बाद जिफ्फी की बारी थी।

ज्ञानी कहते हैं...

मार्क्स कम आएँ हैं तो ज्यादा मेहनत करो तो ज्यादा मार्क्स आएँगे। लेकिन डिस्टर्ब नहीं होना है। समझकर इम्प्रूवमेन्ट लाओ। धीरे-धीरे आपका पावर बढ़ेगा। अगर आप डिस्टर्ब हो जाते हो तो शक्ति खत्म हो जाती है।

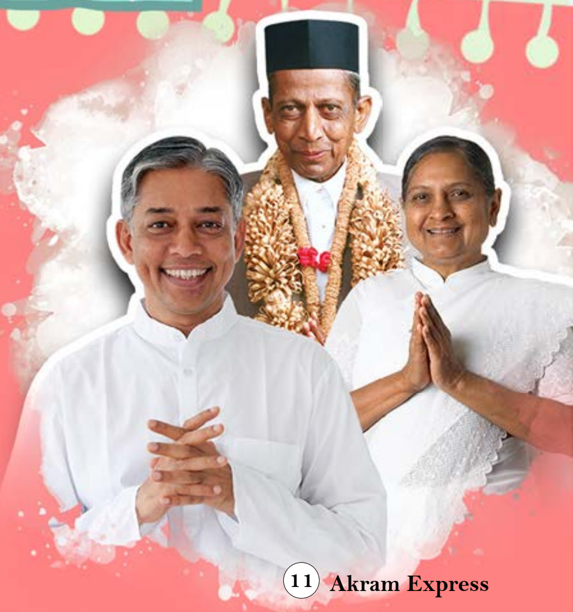

कोई डराए तो...

जिफ्फी स्टेज पर चढ़ा। उसने स्टोरी शुरू की।

यह स्टोरी कोलकाता में रहने वाले नन्हे नरेन्द्र की है। आठ साल के नरेन्द्र के घर के नज़दीक बरगद का एक पुराना पेड़ था। उसकी फैली हुई डालियों पर चढ़ने-उतरने में बच्चों को बहुत मज़ा आता था। नरेन्द्र और उसके मित्रों की वह प्रिय जगह थी। स्कूल से आने के बाद रोज़ दोपहर को नरेन्द्र और उसके मित्र वहाँ इकट्ठा होते थे। वे तने पर चढ़ते, लटकती डालियों पर झूलते और कल्पना करते कि वे किसी जादुई जंगल में सफ़र कर रहे हैं।

एक दिन जब बच्चे पेड़ पर चढ़ रहे थे, तभी एक बूढ़े दादाजी ने चिल्लाकर कहा, 'जल्दी से नीचे उतर जाओ। इस पेड़ पर भूत

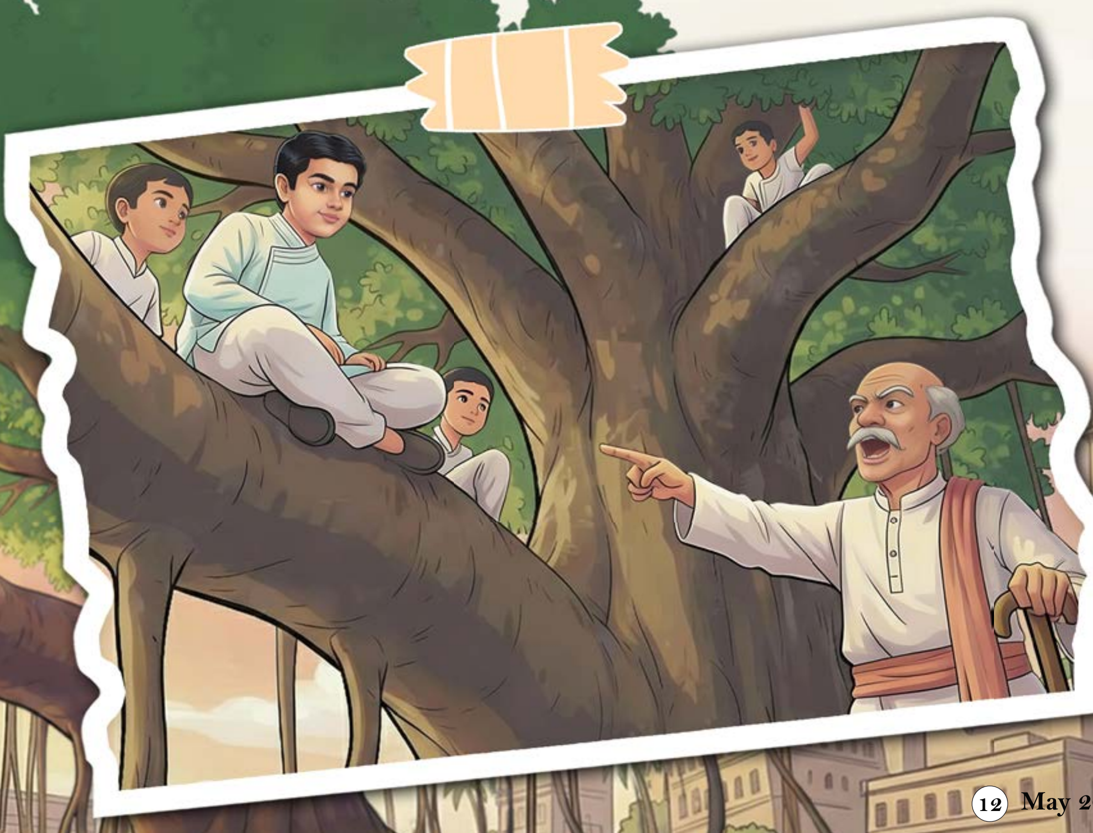

रहता है। वह तुम्हें सज़ा देगा, तुम्हें नुकसान पहुँचाएगा।’

बच्चों का मज़ा डर में बदल गया। एक के बाद एक, वे पेड़ से नीचे उतरे। सबके चेहरे का रंग उड़ गया, सिवाय नरेन्द्र के।

दूसरे दिन पेड़ बिल्कुल शांत था। कोई बच्चे वहाँ खेलने नहीं गए। नरेन्द्र अकेला ही था। रोज़ की तरह वह पेड़ पर चढ़ गया।

कहानी सुनाते समय जिफ्फी को ज़रा भी डर नहीं लग रहा था। मानो नरेन्द्र की कहानी पढ़कर उसमें भी साहस आ गया था! उसने स्टोरी आगे बढ़ाई...

नरेन्द्र के मित्रों ने दूर से उसे देखा। वे घबराते हुए पेड़ के पास गए और नीचे खड़े रहकर ज़ोर से नरेन्द्र से पूछा, ‘भूत तुम्हें पकड़ लेगा तो? तुम्हें डर नहीं लगता?’

नरेन्द्र ने पेड़ से नीचे छलाँग लगाई और अपने दोस्तों की तरफ शांति से देखते हुए कहा, ‘ज़रा सोचो तो सही, हम इस पेड़ पर कितनी बार चढ़े हैं। क्या किसी भूत ने हमें कभी परेशान किया है? कोई हमें डराए तो बिना सोचे-समझे डर क्यों जाते हैं?!’

बच्चे एक-दूसरे की तरफ देख रहे थे। बात तो नरेन्द्र की बिल्कुल सही थी। बच्चों को समझ में आ गया कि किसी के डराने से डरना नहीं चाहिए, अपनी समझ का उपयोग करना चाहिए।

सालों बाद, वही छोटा नीडर बच्चा स्वामी विवेकानंद बना। उन्होंने लाखों लोगों को सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी।

'अब मैंने भी तय किया है कि नरेन्द्र की तरह मैं भी किसी के डराने से डरूँगा नहीं!' ऐसा कहकर जिफ्फी हँसते हुए स्टेज से नीचे उतरा। सबने बहुत तालियाँ बजाईं। पता नहीं कि ज्यादा तालियाँ क्यों बजीं। स्टोरी के लिए? या फिर

ज्ञानी कहते हैं...

पिछला डर परेशान करे कि 'ऐसा होगा तो?' तो कहना कि 'मुझे देखने दो, क्या होता है।' सचमुच कुछ हुआ? नहीं हुआ। ये चिड़ियाँ होती हैं न, पटाखा फूटता है न, तो पहली बार सब उड़ जाती हैं। फिर दूसरी बार जब पटाखा फूटता है न, तो दो-चार उड़ती हैं, बाकी की सब देखती रहती हैं और तीसरी बार देखती भी नहीं हैं और आराम से दाना चुगती रहती हैं। चिड़िया से तो हम ज्यादा बहादुर कहलाते हैं न? दादा भगवान से शक्ति माँगना कि 'डर से बाहर निकल सकूँ, नॉर्मल व्यवहार कर सकूँ...' प्रार्थना करना कि 'दादा-नीरू माँ मेरे साथ रहना!' तो कुछ नहीं होगा।

छह सेन्ट

अगली कहानी सुनाने के लिए ज़ोई स्टेज पर आई। ज़ोई को कहानी मुँह ज़बानी थी। उसके पास कोई कागज़ नहीं था। उसने कहानी शुरू की :

अमेरिका के न्यू सेलेम नामक एक गाँव में अब्राहम नाम का एक युवक रहता था। किराने की एक छोटी सी दुकान में वह काम करता था।

एक शाम दुकान बंद करने के बाद अब्राहम हिसाब करने बैठा। पैसे गिनते-गिनते वह रुक गया। उसने ध्यान से अपनी नोटबुक दोबारा पढ़ी और सोचा, 'अरेरे... यह तो मुझसे गलती हो गई। एक महिला से छह सेन्ट* ज्यादा ले लिए गए हैं!' हिसाब जाँच करने पर उसे पता चला।

बाहर अँधेरा हो गया था। पूरा दिन काम करने के बाद अब्राहम थक गया था। फिर भी ज़रा भी सोचे बिना उसने दुकान बंद की।

शब्द का अर्थ : छह सेन्ट*- जैसे भारत में 'पैसा' और 'रुपया' का चलन है, वैसे ही अमेरिका में 'सेन्ट' और 'डॉलर' का चलन है। छह सेन्ट यानी उस समय के करीब बारह पैसे।

टोपी पहनी और कई माइल चलकर अब्राहम उस महिला के घर पहुँच गया। अब्राहम को अपने घर पर देखकर उस महिला को बहुत हैरानी हुई।

अब्राहम ने पैसे देने के लिए हाथ बढ़ाया और कहा, ‘खुल्ले पैसे वापस देने में मेरी गलती हो गई थी। ये आपके छह सेन्ट।’

उस महिला को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि सिर्फ छह सेन्ट लौटाने के लिए कोई इतनी दूर चलकर आ सकता है! महिला ने धन्यवाद दिया और अब्राहम वापस अपने घर की ओर चल पड़ा।

गलती छोटी सी थी। अगर अब्राहम पैसे वापस नहीं लौटाता तो किसी को पता भी नहीं चलता। लेकिन अब्राहम को खुद को तो पता था न? उसे बेईमानी का बोझ लेकर नहीं घूमना था। गलती छोटी हो या बड़ी, अब्राहम के लिए ईमानदार रहना सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था।

यह ईमानदार युवक बड़ा हो कर अमेरिका का राष्ट्रपति बना, अब्राहम लिंकन। उन्होंने देश की उन्नति के लिए कई काम किए।

ज़ोई ने कहानी समाप्त करते हुए कहा, 'अब मैं भी हमेशा ईमानदार ही रहूँगी। जब कोई मुझे देख नहीं रहा हो, तब भी।'

ज्ञानी कहते हैं...

ईमानदारी का मतलब है - इस तरह जीवन जीना कि किसी की कोई भी गलत चीज हमारे घर में न आए।

टिकिट

जिफ्फी दोबारा स्टेज पर चढ़ा। लेकिन इस बार उसका चेहरा रुआँसा था। उसने बोलना शुरू किया।

यह कहानी गुजरात के एक युवक की है। उनका नाम है, वल्लभभाई पटेल। व्यवसाय से वे वकील थे। और अपने काम में बहुत निपुण थे। उनका एक बड़ा सपना था कि इंग्लैंड जाकर बड़े बैरिस्टर बनें। एक-एक पैसा बचाकर उन्होंने पढ़ाई के लिए पैसे इकट्ठे किए।

आख़िरकार पर्याप्त पैसे इकट्ठे हो गए। वल्लभभाईने इंग्लैंड की टिकिट के लिए आवेदन किया। सारी तैयारियाँ हो गईं। टिकिट घर पर पोस्ट कर दी गई। उस टिकिट पर नाम था, वी.जे.पटेल। यानी कि वल्लभभाई झवेरभाई पटेल का संक्षिप्त नाम। लेकिन फिर कुछ ऐसा हुआ जो वल्लभभाई ने कभी सोचा ही नहीं था। बोलते-बोलते जिफ्फी का गला भर आया। उसने एक घूँट पानी पिया और कहानी आगे बढ़ाई।

वल्लभभाई के बड़े भाई विट्ठलभाई ने यह कागज देखा। कई सालों से उनकी भी इच्छा थी कि वे इंग्लैंड जाकर आगे की पढ़ाई करें। लेकिन इस सपने को पूरा

करने के लिए उन्होंने कोई प्रयास नहीं किया था। अपनी आँखों के सामने टिकिट पर लिखा नाम देखकर विठ्ठलभाई ने सोचा कि मेरा नाम भी 'वी.जे.पटेल' ही है न! अगर मैं वल्लभ की जगह चला जाऊँ तो?

उन्होंने वल्लभभाई से इस बारे में पूछा, 'भाई, तुम मुझे इस टिकिट पर जाने दोगे? मैं तुमसे बड़ा हूँ। इसलिए अगर मेरी पढ़ाई तुमसे पहले पूरी हो जाए तो ज्यादा अच्छा रहेगा।'

इंग्लैंड जाकर आगे पढ़ाई करने का सपना पूरा करने के लिए वल्लभभाई ने कड़ी मेहनत की थी। लेकिन बड़े भाई की विनती के आगे उन्होंने कुछ भी नहीं सोचा। अपना सपना पूरा करने से ज्यादा बड़े भाई का दिल रखना उनके लिए ज्यादा महत्वपूर्ण था। इसलिए उन्होंने खुशी-खुशी अपनी टिकिट विठ्ठलभाई को दे दी।

इतना बोलते ही जिफ्फी फूट-फूटकर रो पड़ा और रोते-रोते बोला, "वल्लभभाई पटेल 'लौह पुरुष' के तौर जाने जाते हैं। लेकिन स्ट्राँग होने का मतलब यह नहीं है कि आप रेस में पहले नंबर पर आएँ या बड़े-बड़े लट्ठे उठाएँ! स्ट्राँग मतलब वल्लभभाई जैसे। वल्लभभाई ने

अपना सपना अधूरा नहीं छोड़ा। विठ्ठलभाई पढ़कर भारत लौटे, उसके बाद वल्लभभाई इंग्लैंड गए। वे बड़े बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। भारत की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने बहुत काम किया और 'सरदार' के तौर पर जाने गए।"

ज़ोई स्टेज पर आई और जिफ्फी को आँसू पोंछने के लिए टिशू दिया। माइक हाथ में लेकर ज़ोई बोली, 'हमने स्टैच्यू ऑफ युनिटी देखा था न? वह स्टैच्यू हमारे सरदार वल्लभभाई पटेल का है।' जिफ्फी स्टेज से नीचे उतरा और ज़ोई ने अगली कहानी शुरू की।

ज्ञानी कहते हैं...

दादा के हृदय की विशालता

दादा ने सारी जिंदगी अपना सुख लोगों को दे दिया। दादा कहते थे, 'मुझे सुख न मिले तो कोई बात नहीं, आप सबको मिलना चाहिए। मैंने अपने सुख की ओर तो कभी देखा ही नहीं और मुझे कभी दुःख हुआ भी नहीं। क्योंकि दूसरों के लिए जीने वालों को कोई दुःख हो सकता है क्या!?'

ऊँची उड़ान

यह कहानी है एक तेजस्वी लड़की की, जो हरियाणा राज्य के छोटे से शहर करनाल में रहती थी। बचपन में घर में उसे सभी प्यार से 'मोन्टु' कहकर बुलाते थे। मोन्टु को आकाश की तरफ देखना बहुत अच्छा लगता था। जब भी कोई विमान उसके घर के ऊपर से गुजरता तो उसकी आँखें चमक उठती थीं और वह सोचती कि यह विमान कैसे उड़ता है? यह कहाँ जा रहा है? क्या मैं भी एक दिन विमान मैं उड़ सकूँगी? मोन्टु विमान, तारे और रॉकेट्स के चित्र बनाती थी।

स्कूल में दाखिला लेने का समय आया। तब तक सभी उसे 'मोन्टु' कहकर ही बुलाते थे। स्कूल में दाखिला लेते समय प्रधानाचार्य ने उसे खुद अपना नाम चुनने का अवसर दिया और उसने अपना नाम चुना, कल्पना। यह तो बस शुरुआत थी। कल्पना ने अपनी पूरी जिंदगी अपनी पसंद से जी, न कि लोगों की देखा-देखी से।

जहाँ स्कूल में ज्यादातर लड़कियाँ चोटी बनाती थीं, वहीं कल्पना छोटे बाल रखती थी। उन दिनों बाल काटने के लिए उनके घर के पास कोई ब्यूटी पार्लर

नहीं था। इसलिए वह अपने बाल खुद ही काटती थी। जहाँ दूसरी लड़कियाँ सलवार कमीज़ पहनती थीं, वहीं कल्पना पैन्ट-शर्ट पहनती थी, क्योंकि वह पोशाक उसके लिए ज्यादा आरामदायक थी।

बचपन से ही कल्पना विमानों के प्रति आकर्षित थी। जब कॉलेज में दाखिला लेने का समय आया तब कल्पना के पिता की इच्छा थी कि वह डॉक्टर या टीचर बने। लेकिन कल्पना को तो एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का अध्ययन करना था। एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग यानी जो उड़ सकती हैं ऐसी चीजें, जैसे कि विमान, रॉकेट्स वगैरह को डिज़ाइन करना और बनाना सीखना। कई लोगों ने उसे इस लाइन में जाने से रोकने की कोशिश की। लेकिन कल्पना नहीं मानी। उसे तो यही सब्जेक्ट पढ़ना था और उसमें ही उसने दाखिला लिया। वह अपनी कक्षा में प्रथम महिला विद्यार्थी थी। पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त करके कल्पना ने अमेरिका की यूनिवर्सिटी से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मास्टर्स और

Story Safari

Ph.D की डिग्रियाँ हासिल कीं।

कल्पना चावला ने बड़ा सपना देखने का साहस किया और वह सपना पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत की। सालों बाद उन्होंने बहुत ही ऊँची उड़ान भरी। सिर्फ आकाश में ही नहीं, बल्कि अंतरिक्ष में (स्पेस में)! वे प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री बनीं।

ज़ोई ने अपनी स्टोरी पूरी करते हुए कहा, 'सब एक-दूसरे का देखकर नकल करते हैं। लेकिन कल्पना ने किसी की नकल नहीं की। सिर्फ अपने दिल की बात सुनी।' उसी समय ऊपर आकाश में विमान की आवाज़ सुनाई दी। सबकी नज़रें ऊपर की ओर उठीं और कुछ क्षणों के लिए बड़ा सपना देखने वाली उस नन्ही कल्पना को याद किया।

ज्ञानी कहते हैं...

जो किसी की नकल करता है वह नकली कहलाता है और अपनी तरह से अपनी समझ से चलता है वह असली कहलाता है।

सेशन समाप्त

आखिरी कहानी समाप्त हुई। हल्की सी खामोशी छा गई। जुगनू चमक रहे थे और गर्मी की रात में भी ठंडी हवा चल रही थी। सबको थोड़ी-थोड़ी नींद भी आने लगी थी। थीओ, रिज़ो और जिफ्फी भी ज़ोई के साथ स्टेज पर आ गए।

थीओ ने बड़ी सी उबासी ली और बोला, 'वाह... किसे पता था कि फिल्म्स के सुपरहीरोज़ से भी ज्यादा शानदार रियल लाइफ के बच्चे हो सकते हैं!'

रिज़ो ने हामी भरते हुए कहा, 'उनके पास सुपरहीरोज़ जैसी उड़ने वाली चादरें नहीं थीं, लेकिन उनमें साहस था।'

'और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे भी हमारे जैसे ही थे। साधारण

बच्चे, जिन्होंने कुछ असाधारण करके दिखाया!', ज़ोई ने जोड़ा।

जिफ्फी बोला, 'हो सकता है कि डीडीमा जंगल में भी ऐसे लिटल हीरोज़ हों। एक को तो मैंने देखा भी था।' और जिफ्फी ने विक्की बंदर की तरफ देखा।

'या फिर बाहर की दुनिया में भी हों।' थीओ बोला, 'ऐसा भी हो सकता है कि ये लिटल हीरोज़ अभी अक्रम एक्सप्रेस में ये कहानियाँ पढ़ रहे हों! लिटल हीरोज़ की खासियत तो यह है कि वे हर जगह हैं। जो बच्चा बिना माँगे दूसरों की मदद करता है, अपनी चीजें दूसरों के साथ शेयर करता है, जो साहसी है और भले ही कठिन हो लेकिन फिर भी सही रास्ते पर ही चलता है, वह लिटल हीरो ही है ना!'

'अपने आसपास देखोगे तो आपको कोई न कोई लिटल हीरो मिल ही जाएगा और हो सकता है कि आप खुद ही एक लिटल हीरो हैं या धीरे-धीरे बन रहे हैं!' ऐसा कहकर ज़ोई ने 'स्टोरी-सफ़ारी' का सेशन समाप्त किया।

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

आलू, चिली से टाको घोड़े के बारे में बात करता है, जिसका सपना रेसकोर्स में हिस्सा लेने का था। जो बहुत मेहनत करके रेसकोर्स में हिस्सा लेने जाता है और वहाँ ब्राउनी उसका बेस्ट फ्रेन्ड बन जाता है। लेकिन इस रेस में कुछ ऐसा होता है जिससे टाको रेस और ब्राउनी दोनों को खो देता है। चलो, हम आलू से सुनते हैं कि रेस में क्या होता है।

जब-जब टाको और ब्राउनी प्रैक्टिस करते थे, तब-तब टाको मज़ाक में ब्राउनी से कहता, 'ब्राउनी, तुम जीतोगे तो मैं तुम्हें अपने जंगल में ले जाऊँगा। और वहाँ तुम्हें एक बड़ी पार्टी दूँगा। और अगर मैं जीता तो?' तो ब्राउनी कहता, 'जीतूँगा तो मैं ही!' हर बार यह सुनकर टाको को ब्राउनी का आत्मविश्वास बहुत पसंद आता था। बहुत बाद में पता चला कि यह उसका आत्मविश्वास नहीं, बल्कि कुछ और ही था।

रेस के दिन जब टाको और ब्राउनी दोनों साथ-साथ खड़े थे तो टाको ने कहा, 'ब्राउनी, मुझे थोड़ा डर लग रहा है।' ब्राउनी ने ऐसे जवाब दिया, मानो उसकी बात सुनी ही न हो - 'आज तो ट्रॉफी मेरी ही होगी, जीतूँगा तो मैं ही!' टाको उसे देखता रहा, वह आगे कुछ बोले, तभी ट्रैक के दरवाजे खुल गए। और बाहर से लोगों की आवाज़ें आने लगीं।

यह सुनते ही टाको के डर की जगह उसके उत्साह ने ले ली। उसने दौड़ना शुरू किया। ऊपर नीला आकाश, नीचे गीली मिट्टी और साइड में बैठे लोगों की चिल्लाहट और उत्साह, यह सब उसने टीवी पर कई बार देखा था। इसी के लिए तो वह यहाँ आया था। उसके उत्साह के साथ उसकी स्पीड भी बढ़ती गई। धीरे-धीरे वह बाकी सभी घोड़ों से आगे निकल गया।

टाको अपनी ही मस्ती में दौड़ रहा था, तभी 'जीतूँगा तो मैं ही!' उसे पीछे से ब्राउनी की आवाज सुनाई दी। उसने थोड़ा धीमा होकर देखा तो ब्राउनी पूरे जुनून के साथ दौड़कर आ रहा था। उसकी आँखों में एक खुन्नस साफ झलक रही थी। उसे टाको दिख ही नहीं रहा था। उसने फिर से कहा, 'जीतूँगा तो मैं ही!' टाको और धीमा हो गया। ब्राउनी उसके पास आ पहुँचा। उसके पास में आते ही टाको को ऐसा लगा मानो गरम आग को छू लिया हो। उसने ब्राउनी को हाँफते हुए देखा तो कहा, 'ब्राउनी, धीरे दौड़ो। तुम्हारी साँस बहुत फुल गई है।' 'जीतूँगा तो मैं ही!' कहकर ब्राउनी ने अपनी स्पीड बढ़ाई। उसकी साँसें इतनी तेज चल रही थीं कि टाको रेस के बारे में भूल गया और उसे उसकी चिंता होने लगी। उसने ज़ोर से कहा, 'ब्राउनी, धीरे... तुम गिर जाओगे।' उसकी बात सुनकर ब्राउनी ने पीछे मुड़कर देखा और फिर उसी खुन्नस के साथ उसने टाको को देखा और बोला, तुम्हें नहीं जीतने

दूँगा, जीतूँगा तो मैं ही। और उसने अपनी स्पीड और ज्यादा बढ़ा दी। उसका चेहरा और गुस्सा देखकर टाको रेसकोर्स के बीच में ही खड़ा हो गया और दूर जाते ब्राउनी को देखता रहा। मानो ब्राउनी नहीं, उनकी दोस्ती भी दूर जा रही थी।

टाको ने फिर से फुल स्पीड में दौड़ना शुरू किया। वह फिनिश लाइन के पास पहुँचा और उसने देखा कि ब्राउनी ने फिनिश लाइन क्रॉस कर ली है। वह मुड़ा और हाँफते हुए बोला, ‘टाको, मैंने तुम्हें

हरा दिया। तुम्हें क्या लगा था, मैं एक छोटे से जंगल के घोड़े से हार जाऊँगा?’ और फिर धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। टाको दौड़कर उसके पास गया। ब्राउनी बेहोश हो गया था।

उसे तुरंत हॉस्पिटल ले जाया गया। डॉक्टर ने कहा कि स्पीड में दौड़ने के कारण उसके दोनों पैर फैक्चर हो गए थे। इतना ही नहीं,

उसके फेफड़ों में ब्लीडिंग हुई थी। अगर वह और दो मिनिट इसी तरह दौड़ता तो शायद वह अपनी जान गँवा बैठता।

यह सोचकर ही टाको की आँखों में आँसू आ गए। एक ही विचार उसे सता रहा था, 'क्या जीतना जीने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है?' उसे लग रहा था कि 'शुक्र है, मेरा बेस्ट फ्रेन्ड ब्राउनी बच गया।' उसे पता नहीं था कि उसका बेस्ट फ्रेन्ड बच गया है लेकिन अब वह उसका बेस्ट फ्रेन्ड नहीं रहा।

'क्या सच में जीतना इतना ज़रूरी है कि उसके पीछे हम मित्रता, हेल्थ, शांति सब कुछ गँवाने को तैयार हो जाते हैं?' अब आगे क्या होगा? ब्राउनी और टाको की फ्रेन्ड्शिप क्यों टूट गई?

My Creation

वेकेशन के फ्री टाइम में पेरेन्ट्स की हेल्प से बनाएँ Creative Craft...

मटिरियल

मनपसंद ऊन के धागों से चित्र तैयार करें।

A4 साइज़ का एक व्हाइट कलर का पेपर लें।

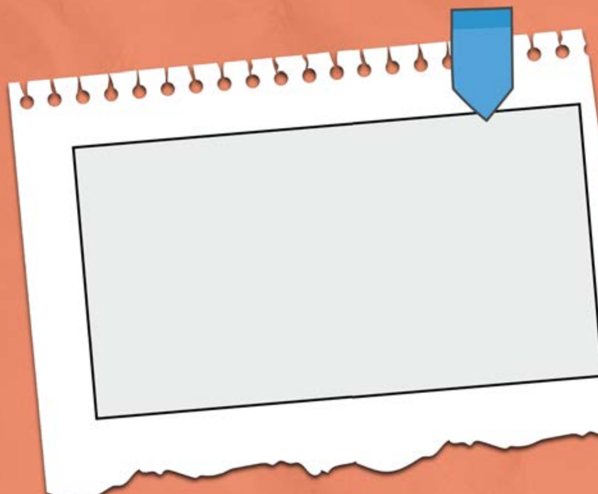

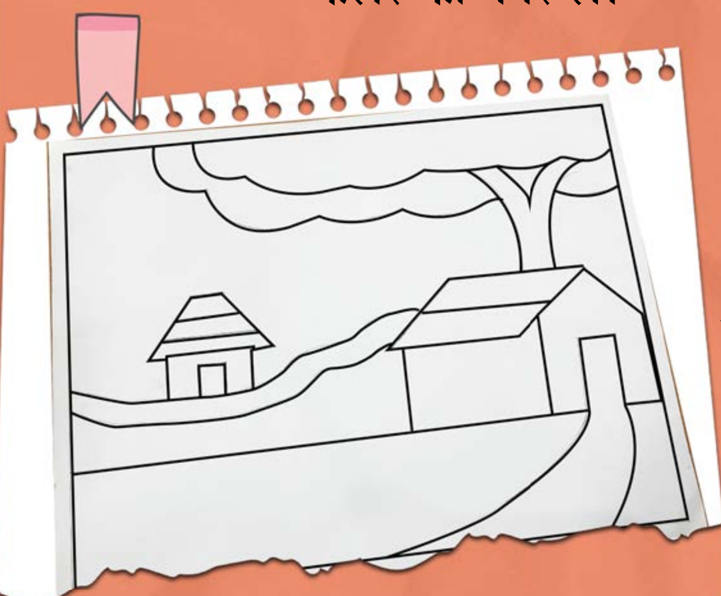

कागज़ पर अपनी पसंद का या दिए गए चित्र के अनुसार डिज़ाइन बनाएँ।

अब डिज़ाइन के अनुसार थोड़े-थोड़े भाग में फेविकोल लगाएँ।

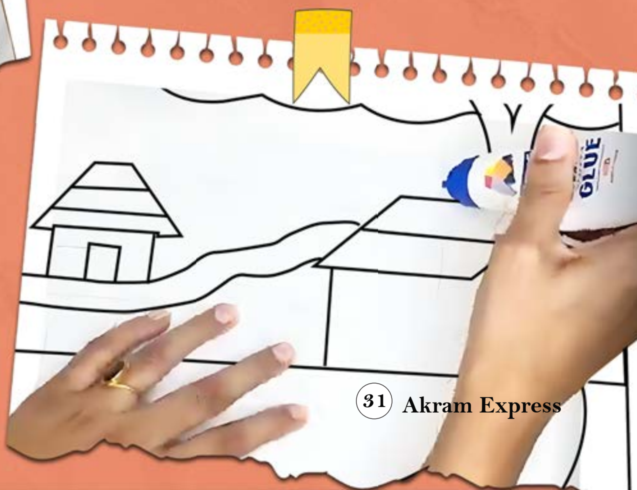

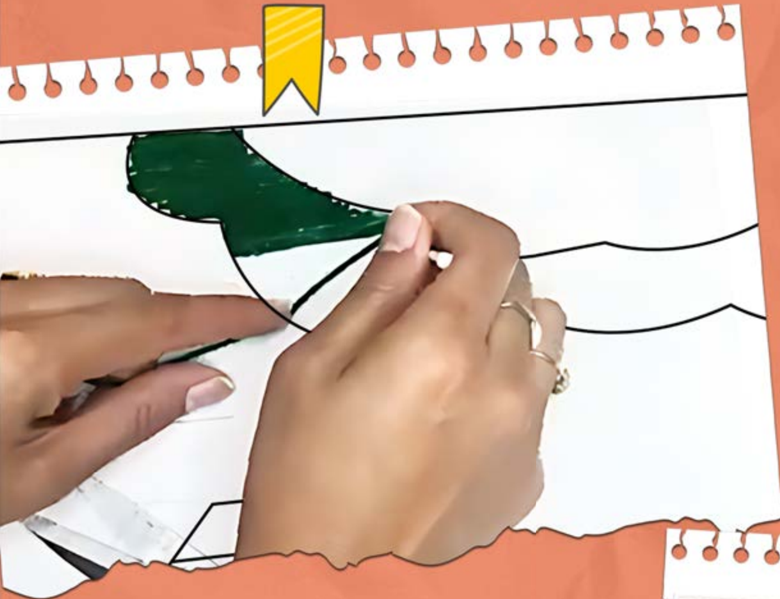

डिज़ाइन के अनुसार जहाँ फेविकोल लगाया है वहाँ ऊन को चिपकाते जाएँ।

जरूरत के अनुसार ऊन को काटते जाएँ।

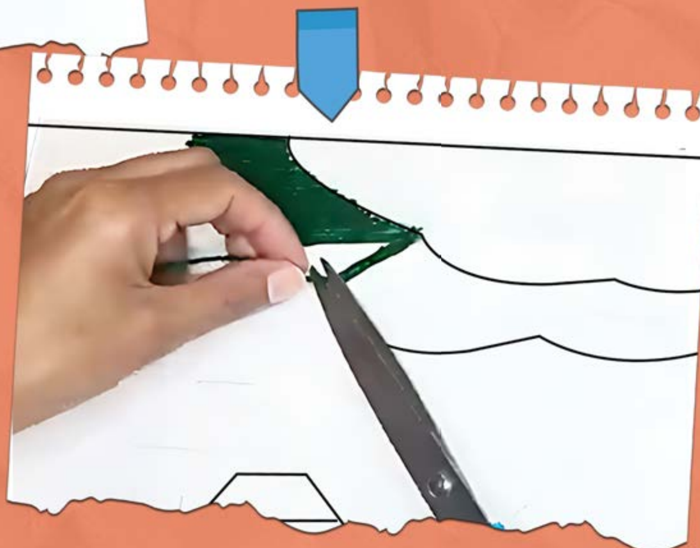

ऊन को हल्के हाथों से प्रेस करें और आउटलाइन बनाते जाएँ।

आपका मनपसंद ऊन का चित्र तैयार है।